उपसंहार

उपसंहार

उपेंद्रनाथ 'अश्क' जी का नाम हिंदी साहित्य में बड़े गौरव के साथ लिया जाता है सफल नाटककार, उपन्यासकार, कथाकार, एक सफल कवि, आलोचक, संस्मरणकार आदि उनके प्रसिद्ध रूप हैं। उन्होंने सभी विधाओं में लेखन किया है, उनके हाथ से एक ही विधा छुटी नहीं है। एक कवि के रूप में साहित्य में पदार्पण किया और आगे सभी विधाओं में श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ कृतियों का निर्माण किया। पारिवारिक झगड़े, परिस्थितियों की विकटता तथा समाज के जुल्म आदि को उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया है। उनके पूरे साहित्य में मध्यवर्गीय समाज का प्रतिबिंब नजर आता है। उन्होंने मध्यवर्गीय समस्याओं को हमदर्दी से समझा, परखा और अपने साहित्य में उजागर किया है।

पहला अध्याय - उपेंद्रनाथ अश्क का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

'अश्क' जी के जीवन तथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उनके साहित्य में जीवन का प्रतिबिंब झलकता हुआ दिखाई देता है। मध्यवर्गीय समाज की दशा का सही चित्रण उनकी विशेषता है। उनका बचपन दुःखमय और पारिवारिक कलहपूर्ण वातावरण में अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए बीता। बचपन से दारिद्रय में पलेनवाले 'अश्क' ने लगन और आत्मविश्वास, जिद्द के बल पर जीवन में सफलता से मंजिल तक पहुँच गए। उन्होंने अनेक जगह पर नौकरियाँ की। जहाँ उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँची उस नौकरी को उन्होंने तिलांजली दे दी। उनके बचपन के जो आरमान थे - वक्ता, वकील, अध्यापक, अभिनेता, संपादक, प्रकाशक और डायरेक्टर बनने के सपने साकार हो गए। प्रकृति साथ न देते हुए भी वे निरंतर साहित्य-सृजन का कार्य करते रहें। अश्क जी ने जीवन में तीन विवाह किए उनकी तीसरी पत्नी कौशल्या का नीलाभ प्रकाशन की स्थापना और अश्क को यक्ष्मा जैसे रोग से बचाकर वापस लाने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। कौशल्या जी सच्चे अर्थ में अश्क जी का सहायक, साथी, सहयोगी, मित्र, प्रेमिका, प्रशंसक, आलोचक और सफल पत्नी के रूप में हमारे सामने आती हैं।

बचपन से ही अश्क जी का जीवन संघर्षमय रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, जीविका, घर तथा साहित्य सभा जगह उन्हें संघर्ष करना पड़ा। अश्क जी को बनाने में कौशल्या अश्क का बहुत बड़ा हाथ है। खुद के साहित्यकार की बलि चढ़ाकर उन्होंने उपेंद्रनाथ के लिए भगवान के पास दुवाएँ माँगी। कौशल्या जी के त्याग और तप के कारण अश्क के रेगिस्तान जैसे जीवन में बसंत की बहार आ गई।

साहित्य के उपन्यास, एकांकी, नाटक, कहानी, काव्य, अनुवाद, संस्मरण आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने सफलता पाई है। सफलता, स्पष्टवादिता, संघर्षशीलता और स्वाभिमान उनके जीवन की मूलभूत विशेषताएँ हैं।

दूसरा अध्याय - उपेंद्रनाथ अश्क के एकांकियों का संक्षिप्त परिचय

अश्क के एकांकी नाटकों का संक्षिप्त परिचय का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने नाट्य-रचना का प्रारंभ 1937 से किया और दिन-ब-दिन आगे बढ़ते गए। उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, व्यंग्यात्मक, राजनीतिक और समस्या प्रधान एकांकी लिखे हैं। उनके एकांकियों की आधारभूमि समाज है। अश्क जी ने केवल मनोरंजन के लिए अपने एकांकियों का निर्माण नहीं किया है। उनके एकांकियों में मध्यवर्गीय समाज की ज्वलंत समस्याओं को चित्रित किया गया है। उन्होंने जीवन की सतत चेतना को अपने नाटकों का आधार बनाया और आज भी वे परंपरागत रूढ़ियों तथा संस्थाओं के विकृत अंगों का उद्घाटन करके हमें हमारे जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराते हैं तथा स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

अश्क जी की विशेषता यह है कि उनकी एकांकी बिलकुल जीवन के धरातल पर उभरते हैं। उनके एकांकियों का प्रधान गुण है पात्र के मानसिक संघर्ष का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। मध्यवर्ग का बड़ा सजीव तथा हृदयग्राही चित्रण उनके एकांकियों में मिलता है। मध्यवर्ग जीवन की विसंगतियों और अंतर्विरोधों पर उन्होंने खुलकर प्रहार किए हैं। उनके एकांकियों की विषयवस्तु का संबंध सामाजिक जीवन की यथार्थता से है। समाज की छोटी-बड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण इनके एकांकियों में मिलता है।

अश्क जी के समस्या नाटकों का मूलाधार नारी है। उनके अधिकांश एकांकी नाटक नायिका प्रधान हैं। अश्क जी की एकांकी नाटकों की नारी न तो स्वर्ग लोक की देवी है और न पुरुष

की दासी या भोग्या। वह पुरुष की जीवन संगिनी है। नारियों के विषय में उनके दृष्टिकोण पूर्णतया यथार्थवादी हैं। अश्क जी नारी को मुक्त संभोग की प्रेरणा देना उन्हें बिलकुल पसंद नहीं है। नग्न, यौन-संबंधों का प्रदर्शन करना 'अश्क' जी को स्वीकार्य नहीं है। नारी को वासना की प्रतिमूर्ति बनाकर उसके साथ खिलवाड़ करना अश्क जी को स्वीकार नहीं है। नारी जीवन के विभिन्न रूपों को उन्होंने सहानुभूति से देखा है और उसका स्वस्थ और यथार्थ चित्रण किया है।

अश्क जी ने अपने एकांकियों में भले ही मानव समस्याओं के हल नहीं किए हैं परंतु ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि प्रेक्षक एवं पाठक स्वयं समस्या का हल खोजने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। उनके एकांकियों में मध्य वर्ग की कृंदन, प्रेम, घृणा, विषाद, संयोग, वियोग आदि चित्र अंकित करके समाज को यथार्थ स्थिति में अवगत कराया है। उन्होंने पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से घटनाओं का चयन करके अपने एकांकियों का निर्माण किया है। जिसमें रूढ़िवादिता एवं प्राचीन जीर्ण-शीर्ण परंपराओं से हताश मध्यम वर्ग के कारण मोह-क्षोभ, विषमता, विद्रुपता, अत्याचार-अनाचार आदि चित्रण हुआ है।

*तीसरा अध्याय - **समस्या : अर्थ, परिभाषा, मीमांसा***

समस्या : अर्थ, परिभाषा, मीमांसा का अध्ययन करने के बाद यह निष्क्रर्ष निकलता है कि 'समस्या' शब्द को कठिन या विकट प्रसंग इस अर्थ में लिया है। समस्या ने मानव समाज को जकड़ रखा है, त्रस्त किया है। समस्या भौतिक और आध्यात्मिक दो प्रकार के होते हैं। वर्तमान युग समस्या का युग है।

'आकाश में असीम विस्तार में टिमटिमाते तारों की तरह समस्याएँ भी अनगिनत और असंख्य हैं। उनकी यात्रा का कोई अंत नहीं है।' समस्या साहित्य, कुंठा, अवसाद और निराशा के जीवन में नई चेतना, नया आत्मबोध तथा नया सहास भर देता है। साहित्य में सम-सामयिक देशकाल एवं साहित्यक परंपराओं के अनुकूल समस्याओं का चित्रण होना चाहिए. यह केवल युग की अनिवार्यता नहीं अपितु मानव जीवन की आवश्यकता है। वर्तमान युग में समस्या साहित्य की आवश्यकता का महत्त्व बढ़ रहा है। उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी तथा कविता आदि साहित्य की कुछ ऐसी विधाएँ हैं जिनके द्वारा समस्याओं से समाज को अवगत किया जा

सकता है। आज के युग में समस्या साहित्य का निर्माण होना अंततः अनिवार्य हो गया है जो जीवन की ओर राष्ट्र से संबंधित आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी समस्याओं को सुलझे हुए रूप में लेखक प्रस्तुत कर रहे हैं।

आधुनिक युग में नारी बहुत सीमा तक स्वतंत्र हुई है किंतु आज भी नारी अनेक समस्याओं से पीड़ित है। बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह और पुनर्विवाह की समस्याएँ नारी जीवन में बना हुआ है। मानव-मानव से संबंध के कारण, जाति, धर्म, वंश के आधार पर संघर्ष, इन अवस्थाओं के अंधानुकरण के कारण संघर्ष, यौन-संबंध और सामाजिक नैतिकता आदि के कारण सामाजिक समस्या निर्माण होती है। आर्थिक अभाव, यौन संबंध, असंतुष्टता, रूढ़ि परंपरा आदि के कारण पारिवारिक समस्याएँ निर्माण होती हैं। परिवार में कमानेवाला एक और खानेवाले अनेक होने से मध्यवर्गीय लोग अभावों से पीड़ित रहते हैं। आज राजनीति दल और नेता का उद्देश्य किसी भी तरह से सत्ता हासिल करना रह गया है। आज राजनीति का अर्थ भ्रष्टाचार का पर्याय माना जाता है। राजनीति को भ्रष्ट करनेवाले नेता के भ्रष्ट चरित्र की आज एक समस्या बन गई है। बढ़ती लोकसंख्या के कारण सुशिक्षित बेकारों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। देश की धार्मिक स्थिति वर्तमान में सर्वाधिक विस्फोटक है। और कोई राजनीतिक या सामाजिक शक्ति इस स्थिति को सुधारने में सक्षम नहीं है। वर्तमान भारतीय राजनीति धर्म और सांप्रदायिकता का सहारा लेकर खेल रही है। इसलिए धर्म के नाम पर धर्मांधता की प्रवृत्ति समाप्त होने के स्थान पर बढ़ती ही जा रही है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारतवासियों के हृदय में अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन आदि के प्रति जो आस्था थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वह तेजी से टूटती चली गई। आज नगर और महानगर पूरी तरह पाश्चात्य रंग में रंगे हुए हैं। आज की संस्कृति विज्ञान की संस्कृति है।

चौथा अध्याय - उपेंद्रनाथ अश्क के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ

अश्क जी के एकांकी नाटकों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि उनके समस्या एकांकी नाटकों में मध्यवर्गीय समाज जीवन की अनेक समस्याओं को अपने यथार्थ

रूप में चित्रण किया है।

'अधिकार का रक्षक' एकांकी में घरेलू नौकरों की समस्या अत्यधिक तीव्रतम बनती जा रही है। आज नौकरों पर मालिकों के अन्याय-अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। मि. सेठ घर की सफाई करनेवाले नौकर को दो-तीन महिने वेतन नहीं देते हैं। 'सयाना मालिक' इस एकांकी में ईमानदार नौकर न मिलने से मालिक लोगों को कौन-कौन-सी कठिनाइयाँ होती हैं, इसका चित्रण इस एकांकी में किया है। 'आपस का समझौता' एकांकी में आज वर्तमान डॉक्टरों की बेकारी की समस्या का चित्रण किया है। डॉ. वर्मा दंत चिकित्सक हैं और डॉ. कपूर नेत्र विशेषज्ञ हैं। वे दोनों आपस में समझौता करते हैं कि वे एक दूसरे के यहाँ रोगी भेजने में सहायता करेंगे। 'अधिकार का रक्षक' एकांकी में राजनैतिक समस्या का चित्रण है। आधुनिक काल में राजनीति भ्रष्टाचार का पर्याय माना जाता है। वर्तमान राजनेता अपने आपको जनता के प्रतिनिधि कहते हैं। परंतु असल में समाजसेवा के पीछे उनका स्वार्थ ही दिखाई देता है। मि. सेठ चुनाव के लिए ढोंग रचते हैं (जिनकी करनी कुछ है और कथनी कुछ)। 'अंधी गली' एकांकी में आज की शिक्षा पद्धति की समस्या का चित्रण हुआ है। शिक्षा की समस्या का उल्लेख करते हुए रचनाकार कहते हैं शिक्षा उच्चतम वस्तु है किंतु आज उसका स्वरूप इतना विकृत हो चुका है कि वह नितांत अनुपयुक्त हो गई है। आज कल की शिक्षा समय के साथ बदलती नहीं है। 'सूखी डाली' एकांकी में परिवार विघटन की समस्या का चित्रण किया है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज में अलग ही स्थान है। आधुनिक काल में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार, औद्योगिकरण, देश की आर्थिक परिस्थिति में परिवर्तन, नवीन दृष्टिकोण, वैयक्तिकता का विकास आदि के कारण संयुक्त परिवार प्रथा द्रुत गति से विघटन होने लगा है। 'सूखी डाली' की समस्या भारतीय समाज की एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। अनेक परिवार इससे पीड़ित हैं। अनेक लोग इसमें पड़े सूख रहे हैं। 'मस्के बाजों का स्वर्ग' एकांकी में सिनेमा जगत की समस्या का वर्णन किया है। सिनेमा संसार ऐसी जगह है यहाँ योग्यता को महत्त्व नहीं दिया जाता है। प्रतिभाशाली व्यक्ति की संपूर्ण योग्यता यहाँ व्यर्थ हो जाती है। यहाँ तिकड़मी कलाकारों द्वारा कला और संस्कृति की हत्या हो रही है। 'अंधी गली' एकांकी में सिनेमा के नायक और नायिका आज के युवक युवतियों का आदर्श बन गए हैं। इस एकांकी में शरणार्थियों की

समस्या का अत्यंत मार्मिक और जीवंत चित्र खिंचा है। इस एकांकी में शणार्थी-पुनर्वास से संबंध में अधिकारियों की धाँधली वृत्ति, रिश्वतखोरी, पक्षपात एवं अन्याय का चित्रण किया गया है। 'देवताओं की छाया में' एकांकी में अश्क जी ने आज के देहाती नव युवक की समस्या का चित्रण किया है। आज के देहाती युवक शहरों का आकर्षक वातावरण देहात के सहज और स्वस्थ जीवन को विद्रुप बना रहा है।

उपेंद्रनाथ अश्क जी के एकांकियों में आर्थिक समस्या का चित्रण किया है। 'अंधी गली' एकांकी में महँगाई ने सबको तोड़ दिया है। बेचारे रामचरण को आधी-आधी रात तक काम करना पड़ती है। क्योंकि परिवार का खर्च चलाना अत्यंत कठिन है। कौल साहब के पास पैसे नहीं हैं। इस प्रकार महानगरों में महँगाई की समस्या सब से प्रमुख समस्या बन गई है। आज महँगाई के कारण लोग बेचैन हैं। 'देवताओं की छाया में' एकांकी में शोषण-ग्रस्त मजदूर जीवन की समस्या प्रस्तुत की है। 'देवनगर' निकटवर्ती गाँवों के श्रमिक लोग सुबह सात-आठ से शाम के सात-आठ बजे तक सर्दीगर्मी में काम करते हैं। काम करनेवाले मजदूरों के बच्चों को दूध नहीं मिलता और सभी दूध देवनगर में चला जाता है। जलाल कहते हैं - 'गाँव में दूध कहाँ है ? दूध तो सब देवनगर चला जाता है, बच्चों तक के लिए नहीं बचता।' 'फादर्ज' एकांकी में अध्यापकों की अपने कर्तव्य के प्रति उदासीनता के कारण आजकल अध्यापक घर का खर्च चलाने के लिए ट्युशन लेते हैं। कहीं-कहीं पार्ट-टाईम काम करते हैं। कोर्स की किताबों के आलावा कुछ नहीं जानते। और मशीनों की तरह पढ़ाते हैं।

'अश्क' जी ने एकांकी नाटकों में मनोवैज्ञानिक समस्या का चित्रण किया है। 'मैमूना' एकांकी में आमना अपनी वासना के वशीभूत होकर सादिक और अरशद दोनों के प्रति विश्वासघात करती है। माजिद की प्रेमिका बनी। उसकी अस्थिरता का मूल कारण उसकी अतृप्त वासना, नित नए पुरुषों की ओर आकर्षित होती है। अपनी उद्दाम वासना के कारण वह नारी न रहकर वासना की प्रतिमा बन जाती है। 'चुंबक' एकांकी में मूल समस्या सेक्स की है। गौतम एकांकी के केंद्र में है। वह एक भावुक कवि है जो अपनी कविताओं से सरिता को मुग्ध कर उसे चाहने लगता है। गौतम गोपा जैसी संयमित और बौद्धिक युवती के साथ विश्वासघात कर सकता

है। गौतम ने सरिता और गोपा दोनों को आकर्षित कर लिया था। सरिता गौतम के वास्तविक स्वरूप को नहीं जानती है। 'पापी' एकांकी में मानव के उद्दाम वासना है। शांतिलाल अपनी बीमार पत्नी की सेवा करने के छाया की छोटी बहन रेखा को बुला लेता है। शांतिलाल ने रेखा के साथ अनैतिक संबंध रखता है। शांतिलाल पापी है। एक ओर अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात करता है। दूसरी ओर रेखा के जीवन के साथ खेलता है।

इस प्रकार उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपनी एकांकी नाटकों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक समस्या का चित्रण किया है।

पाँचवाँ अध्याय - उपेंद्रनाथ 'अश्क' के एकांकियों की साहित्यिक दृष्टि से विशेषताएँ

उपेंद्रनाथ अश्क जी मूलतः समस्या नाटककार हैं। समस्या एकांकी नाटकों की वस्तुविन्यास का चुनाव समससामयिक जीवन की किसी समस्या विशेष के आधार पर होता है अश्क जी के एकांकियों की कथावस्तु का केंद्र मध्य्य वर्ग अथवा निम्न वर्ग का समाज बन गया है अश्क जी ने अपनी कथावस्तु के लिए समाज और विशेषतः परिवार को चुना है। परिवार की समस्याओं को सामने रखकर 'अश्क' जी ने बड़ी सफलता के साथ समाज पर व्यंग्य किए हैं।

अश्क जी के एकांकियों की कथावस्तु समाज की उन समस्याओं से ओतप्रोत है, जिसमें रूढ़िवादिता एवं प्राचीनता जीर्ण-शीर्ण परंपराओं से हताश मध्यम वर्ग के करूण-कृंदन, हर्ष-विषाद, संयोग-वियोग, ईर्षा-द्वेष, घृणा-प्रेम, मोह-क्षोभ, विषमता-विद्रुपता, अत्याचार-अनाचार आदि का चित्रण हुआ है। अश्कजी ने अपने आंरभिक एकांकी 'पापी' में बहू पर सास के अत्याचार का वर्णन करते हुए स्त्रियों की दयनीय स्थिति और उनके यथार्थ का चित्रण किया है। इसी तरह 'सूखी डाली' एकांकी में एक सुंदर एवं सजीव सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक एकांकी है। इसमें संयुक्त परिवार पर व्यंग्य किया गया है। 'कइसा साहब : कइसी आया' नामक हास्यपूर्ण एकांकी में लेखक ने बंबइया बोली में मध्यवर्गीय परिवार का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया गया है। 'मस्के बाजों का स्वर्ग' तथा 'पक्का गाना' दोनों एकांकियों में फिल्मी जगत की दलबंदी, वहाँ के छल कपटपूर्ण व्यवहार, दाँवपेंच आदि का व्यंग्यात्मक शैली में चित्रण किया है। 'तौलिये' एकांकी में समाज के अंतर्गत

रहनेवाले ऐसे दो विरोधी स्वभाव के पात्रों का संघर्ष दिखाया गया है। 'देवताओं की छाया में' एकांकी में सामाजिक विषमता का अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

कथावस्तु का प्रारंभ, मध्य, अंत चरित्रों के स्वाभाविक कार्य व्यापार के क्रमिक रूप से विकसित होता हुआ नाटक के उद्देश्य को अंत में प्रतिपलित करता है। अश्क के समस्या एकांकी नाटकों के कथानक पर्याप्त सुगठित हैं, कहीं भी विस्तार दोष नहीं है। प्रासंगिक गाथाओं की सृष्टि अश्क जी ने कम की है, उनका मूल उद्देश्य अधिकारिक कथा विकसित करना है। नाटककार के विस्तृत अनुभव और सुलझे हुए दृष्टिकोण के आधार पर एकांकी नाटकों का निर्माण किया है।

'अश्क' जी प्रारंभ से ही यथार्थ के प्रति सजग हैं। वे समस्याओं का विश्लेषण पात्रों के सहज विकास के माध्यम से करते हैं। वे न तो समस्याओं को पात्रों पर आरोपित करते हैं और न पात्रों को विचारों का यंत्र बनाते हैं। अश्क ने बहुत ही कम समय के लिए नाटक में आनेवाले पात्रों की चारित्रिक खूबियों को संवादों या संकेतों से उभारा है। जैसे उनके सफल प्रहसन 'जोंक' में एक पंजाबी, एक हिंदुस्थानी और एक मारवाड़ी पड़ोसी कुछ क्षण के लिए ही नाटक में उपस्थित होते हैं। अश्क जी ने अनुपस्थित पात्रों को अन्य पात्रों के संवादों द्वारा केवल परिचित कराने की ही कोशिश नहीं की है वरन् उन्हें साकारता प्रदान करने की भी कोशिश की है। इसके सबसे सफल उदाहरण 'चरवाहे' और 'चिलमन' एकांकी में हैं। 'चिलमन' एकांकी में शशि रंगमंच पर नहीं आती है। अपनी अनुपस्थिति में भी नाटक में महत्त्व प्राप्त कर लेती है। अमूर्त पात्रों को संवादों और संकेतों से मूर्त रूप में चरित्रांकित करने की यह विशेषता अश्क की अपनी नितांत मौलिकता है। अश्क जी के एकांकी के पात्र हमारे जीवन का दर्पण बनकर प्रस्तुत होते हैं।

अश्क जी ने वर्तमान मध्यवर्गीय जीवन के विविध व्यक्तियों का चरित्रांकन अपने सामाजिक एकांकी नाटकों में किया है। डॉक्टर, पत्रकार, कवि, क्लर्क, अभिनेता आदि विविध पुरुष चरित्र उनके नाटकों में यथार्थ रूप उतरते हैं। अश्क जी ने एकांकी नाटकों में पारिवारिक समस्याओं से संबंधित विविध पात्रों को पिता, पुत्र, पति, माता, बहु, भाई, बहन के रूप में चित्रित किया है। 'आपस का समझौता' में डॉक्टर, अधिकार का रक्षक में नेता और संपादक 'चुंबक' में

कवि, 'मस्केबाजों का स्वर्ग' में नए फिल्मी अभिनेता, निर्देशक, लेखक, गीतकार, संगीत आदि चरित्र वर्तमान जीवन की सही तस्वीर खींचते हैं।

अश्क जी के समस्या एकांकी नाटकों का मूलाधार नारी है। उनके अधिकांश एकांकी नाटक नायिका प्रधान है। इनके एकांकी नाटकों में नारी के विविध रूप मिलते हैं। भरी, श्रीमती सेठ, छाया जैसी संस्कारों में आबद्ध नारियाँ हैं। उनके एकांकी नाटकों में प्रेमिकाओं के विविध रूप हैं - रत्नी, सरिता, गोपा, आमना, रमा, निशा, कामदा आदि प्रस्तुत हैं। रत्नी और सरिता पंख फड़काती चिड़िया के समान उड़ने के आतुर हैं। नारी पात्रों के चरित्र में अश्क का दृष्टिकोण प्रत्येक स्थान पर सामाजिक यथार्थवादी है। इस प्रकार अश्क जी ने नारी जीवन की विभिन्न रूपों को उन्होंने सहानुभूति से देखा है और उसका स्वस्थ और यथार्थ चित्रण किया है।

साहित्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक में संवादों का अधिक महत्त्व है। नाट्य कला का मूल संवाद है। अश्क जी ने प्रायः पात्रानुकूल संवादों की रचना की है। इसलिए उनके ग्रामीण पात्र ग्रामीण बोली, बंगाली पात्र बंगला बोली, पंजाबी पात्र पंजाबी बोली, अंग्रेजी पात्र अंग्रेजी मिश्रित बोली, मुस्लिम पात्र उर्दू बोली आदि का प्रयोग करते हैं। इससे न केवल स्थानीय प्रभाव की सृष्टि हुई है, अपितु संवादों में स्वाभाविकता एवं सहजता भी आ गई है। 'जोंक' एकांकी में दो पात्रों - पंजाबी और मारवाड़ी होने का परिचय उनके संवादों की भाषा से ही पता लगता है। पंजाबी कहते हैं - 'की गल्ल, की गल्ल ए, किद्धर चोरी हुई है किद्धर !'

संक्षिप्तता संवाद की दूसरी विशेषता है। संक्षिप्त संवाद से नाटक की गति में शिघ्रता आती है। 'पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ' एकांकी में रामकिशन के संवाद की भाषा ग्रामीण और अक्खड़ संस्कार को भी प्रकट कर देता है। अश्क जी के एकांकी नाटकों में संवादों की स्वाभाविकता पर पूरा-पूरा ध्यान रखा है। उनके पात्रों की भाषा कृत्रिम नहीं जान पड़ती है। इनके एकांकी नाटकों में संवाद इसलिए असाधारण हैं कि उनमें नदी की धारा की भाँति, परिस्थितियों के ढलाव के अनुकूल उत्तर-प्रत्युत्तर चलते हैं। दरबारी ढंग का वाहवाही वाला संवाद नहीं है। उनकी नायिकाएँ शास्त्रार्थी पंड़ितों की भाँति सूत्र गुंफन ही करती है।

'अश्क' जी के संवादों की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है उसमें हास्य और व्यंग्य का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। समस्याओं का उद्‌घाटन करने के लिए ऐसे संवादों का प्रयोग करते हैं। 'जोंक', 'मैमूना', 'तौलिये', 'मस्केबाजों का स्वर्ग' इन एकांकियों हास्य व्यंग्य भरे संवाद मिलते हैं।

इस प्रकार अश्क जी के संवादों में संक्षिप्तता, रोचकता, सांकेतिकता, स्वाभाविकता, सजीवता और मार्मिकता है। अश्क के संवाद सहज, सरल, पात्र और स्थिति के अनुकूल तथा नाटक की गति प्रदान करनेवाले हैं।

अश्क जी की भाषा शैली की अपनी एक विशेषता है। एकांकियों में वातावरण, परिस्थिति और काल के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। इनके शैली की सबसे बड़ी विशेषत: यह है कि उनके एकांकी नाटकों में प्रतीकात्मकता या सांकेतिकता है। 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का नाम ही संकेतात्मकता है। इसके अतिरिक्त फानूस का प्रतीक बच्चे के जीवन का प्रतीक है। 'चुंबक' एकांकी का प्रतीक है - लोक-चून के दो कणों। 'सूखी डाली' एकांकी का नाम प्रतीकात्मक है - सूखी डाली - वटवृक्ष का प्रतीक है। अश्क की एकांकी नाटक की शैली गंभीर भी है और काव्यमयी है। नाट्य शैली, संवाद शैली, प्रतीकात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, दृश्य शैली आदि शैली अश्क जी के एकांकी नाटकों में मिलते हैं।

'अश्क' जी ने अपने एकांकियों को अधिकाधिक अभिनेय बनाने के लिए रंग संकेतों का प्रयोग बड़ी सफलता के साथ किया है। उन्होंने अभिनेयता को ध्यान में रखकर अपने एकांकियों में ऐसे रंग संकेत दिए हैं जो दिग्दर्शक, अभिनेता, मंच सज्जा और ऑर्केस्ट्रा सभी के लिए उपयोगी है। रंग-संकेतों की सबसे पहली विशेषता - रंगमंच की व्यवस्था। जैसे 'पर्दा उठाओं : पर्दा गिराओ' एकांकी के आरंभ में रंग संकेत दिया है - पर्दा उठने पर जो रंगमंच दिखाई देता है, वह बड़ी अव्यवस्थित दशा में है। एक ओर काँच का सैट और कुर्सियाँ रखी हैं। एक कोने में बड़े-बड़े कमान, तूणीर और दो गदायें पड़ी हैं। 'जोंक' एकांकी में अभिनय करते हुए बातें करते परेशानी के स्वर में, कंधे झटक कर, चिढ़ कर, हँसकर, चारपाई पर बैठकर, गाँव तकिया बगल में लेते हुए अभिनय करते हैं। इस प्रकार अश्क जी ने अपने एकांकियों में विस्तृत एवं व्यापक रंग-संकेत देकर

अभिनेता, दिग्दर्शक और मंच-व्यवस्थापक सभी को सुविधा प्रदान की है। जिसमें अभिनेता, पात्र की प्रकृति और मन:स्थिति को अच्छी तरह समझकर तदनुसार अभिनय कर सकता है।

अश्क जी के एकांकियों की कथा जिस वातावरण एवं देशकाल से संबंधित है, उसी की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का संकेत स्थान-स्थान पर किया गया है। कथा में संबंधित पात्रों की वेशभूषा, रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, चाल-ढाल, खान-पान आदि का यथार्थ चित्रण करते हुए एकांकियों को स्वाभाविक और विश्वसनीय बनाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। 'सूखी डाली' एकांकी में संयुक्त परिवार की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। 'दिनभर इस में कोलाहल मचा रहता है। कभी घर की स्त्रियाँ धूप लेती हैं, कभी गप्पे लड़ाती हैं। कभी तड़ती-झगड़ती हैं, और न कुछ हो तो स्नानागार में पड़े कपड़े ही धोया करती हैं।'

अश्क जी ने प्राय: ऐसे ही एकांकी नाटक अधिक लिखे हैं - जिसमें काल विशेष से संबंध घटनाओं का निरूपण हुआ है। अश्क जी 'संकलन-त्रय' का निर्वाह करते हुए एकांकियों में काल, कार्य एवं स्थान की एकता का बराबर ध्यान रखा गया है। 'आपस का समझौता' इस एकांकी का पहला दृश्य सुबह आठ बजे से आरंभ होकर डॉ. वर्मा और कपूर की बातों में ही थोड़ी देर में समाप्त हो जाता है। दूसरा दृश्य रात को नौ बजे सुबह से आरंभ होकर डॉ. वर्मा, श्रीमती वर्मा की बातों में कुछ क्षणों में ही समाप्त हो जाता है। फिर तीसरा दृश्य दूसरे दिन के नौ बजे सुबह से आरंभ होकर डॉ. वर्मा, रोगी, डॉ. बृजलाल और परतूल की वार्तालाप में लगभग एक घंटे में समाप्त हो जाता है। इस तरह इस एकांकी की संपूर्ण घटनाएँ पहले दिन के सुबह आठ बजे से लेकर दूसरे दिन प्रात: दस बजे तक घटित होती हुई दिखाई गई है।

अश्क जी ने 'तौलिये' एकांकी का मुख्य कार्य है - एक व्यक्ति की सुरुचि, सभ्यता और सफाई की उस सनक का निरूपण करना, जिससे परिवार में संघर्ष पैदा हो सकता है और व्यर्थ ही दूसरे की भावानाओं को आघात पहुँचता है। संपूर्ण अन्य व्यापार इसी एक कार्य की पूर्ति करते हुए दिखाए गए हैं।

किसी भी एकांकी की संपूर्ण घटनाओं एवं समस्त कार्य-व्यापारों का एक सीमित क्षेत्र में घटित होना 'स्नान-संकलन' कहलाता है। 'तौलिये' एकांकी की संपूर्ण घटनाएँ नई दिल्ली

में स्थित वसंत के ड्राइंग-रूप, रसोईघर एवं स्नानागार में ही घटित होती हुई दिखाई गई है। इसी तरह 'देवताओं की छाया में' एकांकी सभी घटनाएँ 'देवनगर' कॉलनी के पास बसे हुए गाँव में काकू के घर के अंतर्गत घटित होती हुई दिखाई गई हैं। इस प्रकार अश्क जी ने 'स्थान-संकलन' का निर्वाह बड़ी तत्परता एवं कुशलता के साथ लिया है।

अश्क जी के एकांकियों में प्राय: कोई एक मूलभूत विचार अथवा कोई एक उद्‌देश्य ही अधिक निखार के साथ पाठकों एवं प्रेक्षकों के सामने उभरकर आया है। प्राचीन पपरंपराओं, रूढ़ियों, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रुपताओं में ग्रस्त भारत के जर्जर एवं हताश मध्य वर्ग के प्रेम, संघर्ष, घृणा, कृंदन, विषाद, पीड़ा, वेदना आदि का यथार्थ एवं स्वाभाविक चित्र प्रस्तुत करने के उद्‌देश्य से अपने एकांकियों का निर्माण किया है।

अश्क जी मूलत: समस्या नाटककार हैं उनके सभी एकांकी नाटक समस्या प्रधान हैं। उन्होंने अपने एकांकी नाटकों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, मनावैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण किया है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. उपेंद्रनाथ अश्क के एकांकियों में मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर उनका विशेष अध्ययन किया है।
2. विवेच्य एकांकियों की सूक्ष्मता से अध्ययन करके साहित्यिक दृष्टि से विशेषताओं को जानने का प्रयास किया है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ -

1. उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने एकांकियों में भले ही मानव-समस्याओं के हल नहीं दिए हैं। परंतु ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि प्रेक्षक एवं पाठक स्वयं समस्या का हल खोजने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है।
2. उपेंद्रनाथ अश्क जी की एकांकियाँ मानव जीवन की यथार्थ अनुभूतियों की ओर संकेत करती हैं।

3. उपेंद्रनाथ अश्क के एकांकियों में प्रतिबिंबित समस्याएँ प्राय: वर्तमानकालीन संपूर्ण भारत की ही समस्या है।

4. उपेंद्रनाथ अश्क जी के एकांकियों में परिवार विघटन का दु:खद चित्रण किया है जिससे एक्रांकी नाटक पढ़कर पाठक अपना परिवार टूटने में सावधानी बरत सकते हैं।

अनुसंधान की नई दिशाएँ

उपेंद्रनाथ अश्क के एकांकियों पर निम्न दिशाओं में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. अश्क के एकांकियों में नारी चित्रण।
2. अश्क के एकांकियों में चित्रित समाज जीवन।
3. अश्क के एकांकियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण।
4. अश्क के एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प।

उपर्युक्त विषय मुझे अपने विषय के अध्ययन करने के दौरान प्राप्त हुए है। उन विषयों पर भविष्य में अनुसंधान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. नं.	*लेखक का नाम*	*ग्रंथ का नाम*	*प्रकाशन*	*संस्करण तथा वर्ष*
1	2	3	4	5
अ)	*आधार ग्रंथ -*			
1.	उपेंद्रनाथ अश्क	पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी संग्रह	नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।	प्रथम, 1967
आ.	*संदर्भ ग्रंथ -*			
1.	अश्क उपेंद्रनाथ	ज्यादा अपनी कम परायी	नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।	प्रथम, 1958
2.	अश्क कौशल्या	साक्षात्कार और विचार	नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।	प्रथम, 1992
3.	अश्क कौशल्या	अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व	नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद ।	
4.	आत्रेय (डॉ.) कमला	आधुनिक मनोविज्ञान और सूर काव्य	वि. भू. प्रकाशन, साहिबाबाद ।	प्रथम, 1976
5.	ओझा दशरथ	कलापूर्व एकांकी	राज्यपाल एँड सन्स, दिल्ली ।	चतुर्थ,1976
6.	ओझा (डॉ.) मान्धाता	हिंदी समस्या नाटक	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा ।	प्रथम, 1976
7.	भास्कर (डॉ.) विमला	हिंदी में समस्या साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा ।	प्रथम, 1983
8.	चव्हाण (डॉ.) अर्जुन	राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।	प्रथम, 1985
9.	धरत (डॉ.) अर्जुन	नागार्जुन के नारी पात्र	शब्दशक्ति प्रकाशन, कानपुर ।	प्रथम, 1989

1	2	3	4	5
10.	देशमुख (डॉ.) रमेश	आठवें दशक के हिंदी कहानी में जीवनमूल्य	विजया प्रकाशन, 125/64, के, गोविंद नगर, कानपुर।	
11.	गोरे(डॉ.) बलभमीराज	हिंदी भाषा लिपि व विकास	विकास प्रकाशन, 311 सेक्टर 'सी' वार्ड, कानपुर।	प्रथम, 1998
12.	गाडगील(डॉ.) एम्. के.	हिंदी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	पुस्तक संस्थान, 109/50 ए, नेहरू नगर, कानपुर।	प्रथम, 1976
13.	गुप्त(डॉ.) अवधेशचंद्र	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक विचार तत्त्व	नीरज बुक सेंटर, 81, विजय ब्लाक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।	प्रथम, 1994
14.	गुप्त(डॉ.) कुलदीपचंद्र	उपन्यासकार उपेंद्रनाथ 'अश्क'	पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलनी, जयपुर - 3020 003।	1986
15.	माली (डा.) शिवराम	स्वच्छंदवादी नाटक और मनोविज्ञान	पुस्तक संस्थान, 109/50 ए, नेहरू नगर, कानपुर।	
16.	मथुरा(डा.)जगदीशचंद्र	नाटककार 'अश्क'	नीलाभ प्रकाशन गृह खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद।	प्रथम, 1954
17.	पांडेय फूलचंद्र	प्रतिनिधि एकांकी	राम प्रसाद एंण्ड सन्स, आगरा।	
18.	रामेश्वर नारायण रमेश	साहित्य में नारी विविध संदर्भ	नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम, 1990
19.	रस्तोगी (डा.) शैल	हिंदी उपन्यासों में नारी	वि. भू. प्रकाशन, इलाहाबाद।	प्रथम, 1977

1	2	3	4	5
20.	सिंह (डॉ.) अहिबरन	अश्क का कथा साहित्य	अनिल कुमार शर्मा कौशिक साहित्य सदन, शाहदरा, दिल्ल।	प्रथम, 1974
21.	सिंह धर्मराज	अरूणाचल की आदिजन जाति का समाज भाषिकी अध्ययन	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	प्रथम, 1990
22.	सिंह (डॉ.) उमाशंकर	समस्या नाटककार 'अश्क'	संजय बुक सेंटर, गोलघर, वाराणसी।	प्रथम, 1982
23.	सरोदे (डॉ.) पीतांबर	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना	अतुल प्रकाशन, 107 /285, ब्रह्मनगर, कानपुर - 12।	प्रथम, 1987
24.	शर्मा(डॉ.) हरबंसलाल	सूरदास	राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथम, 1966
25.	सक्सेना (डॉ.) द्वारिका प्रसाद	हिंदी के प्रतिनिधि एकांकीकार	विनोद पुस्तक मंदिर रांगंय राघव मार्ग, आगरा - 2।	प्रथम, 1982
26.	शर्मा राजपाल	हिंदी वीर काव्य में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति	आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।	प्रथम, 1974
27.	वर्मा (डॉ.) प्रभा	हिंदी उपन्यास : सामाजिक परिवर्तन और स्वरूप	बी. के. तनेजा पब्लिशिंग कंपनी 28, नई दिल्ली - 110 015	प्रथम, 1990

1	2	3	4	5
इ) कोश -				
1.	बाहरी (डॉ.) हरदेव	हिंदी शब्द कोश	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली	ग्यारहवाँ, 1997
2.	जैन सुमेजी	हिंदी मराठी शब्दकोश	सुरस प्रकाशन, गौरा सदन, सोलापुर।	
3.	शर्मा (डॉ.) रामचंद्र	हिंदी मानक कोश	सचिव प्रथम शासन निकाथ, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।	
4.	डॉ. सत्य प्रकाश	मानक अंग्रेजी विश्वकोश	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।	
5.	श्रीवास्तव विश्वेश्वर नारायण	हिंदी राष्ट्र भाषा कोश	इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।	1952
ई) पत्रिका -				
1.	गिरधर राठी	द्विमासिक समकालीन भारतीय साहित्य	सचिव साहित्य अकादमी विक्रय विभाग, स्वाति मंदिर मार्ग, नई दिल्ली।	
2.	विद्यानिवास मिश्र	साहित्य अमृत, नवंबर, 2000	मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी, 4/19 आसफअली रोड़, नई दिल्ली।	